फिलेमोन को पत्र

परिचय

लेखक: फिलेमोन को लिखी गई पत्री का लेखक प्रेरित पौलुस है (1:1)।

लिखने की तिथि: फिलेमोन की पुस्तक लगभग 60 ईसवी में लिखी गई थी। फिलेमोन को लिखा गया पत्र प्रेरित पौलुस द्वारा लिखे गए अन्य सभी पत्रों में से सबसे लघु है। यह दासत्व की प्रथा को सम्बोधित करता है। पत्र बताता है कि पौलुस ने इसे बन्दीगृह में से लिखा था। फिलेमोन के अपने दास थे। वहाँ की कलीसिया फिलेमोन के घर पर ही इकट्ठा होती थी।

संक्षिप्त सार: पौलुस ने दासों के स्वामियों को आदेश दिया था कि उनके दासों के प्रति उनके कुछ दायित्व हैं। साथ ही उसने दासों को भी उनका नैतिक दायित्व सिखाते हुए कहा था कि वे परमेश्वर का भय मानने वाले बनें। फिलेमोन की पुस्तक में पौलुस ने दास-प्रथा को गलत नहीं ठहराया, परन्तु उनेसिमुस को एक दास की बजाय एक मसीही भाई के तौर पर प्रस्तुत किया। जब स्वामी अपने दास को भाई कहकर सम्बोधित करता है, तो वह दास उस स्तर को प्राप्त कर लेता है जहाँ पर दास होने की कानूनी अवस्था का कोई अर्थ नहीं रह जाता। आरम्भिक कलीसिया ने दास-प्रथा पर सीधा आक्रमण नहीं किया, परन्तु स्वामियों और दासों में एक नए सम्बन्ध की नींव अवश्य रखी। पौलुस ने फिलेमोन और उनेसिमुस को मसीही प्रेम के बन्धन में बाँधने का प्रयास किया ताकि दास उनेसिमुस की स्वतन्त्रता को सुनिश्चित किया जा सके। केवल सुसमाचार के प्रकाश में आने से ही दास-प्रथा का अन्त सम्भव था।

व्यावहारिक प्रयुक्ति: मालिक, राजनेता, संस्थानों के मुखिया और माता-पिता अपने मसीही कर्मचारियों, सहकर्मियों और परिवार के सदस्यों को मसीह की देह का अंग मानते हुए पौलुस की इन शिक्षाओं का पालन कर सकते हैं। अवश्य है कि आधुनिक समाज में मसीही लोग अपने सहायकों को अपनी महत्त्वकांक्षाओं की पूर्ति करने का माध्यम न समझें, बल्कि मसीही भाई-बहनों के समान उनसे बर्ताव करते हुए प्रेम पूर्वक व्यवहार करें। इसके अतिरिक्त, सभी मसीही अगुवे इस बात को पहचान लें कि उन्होंने अपने मसीही अथवा गैरमसीही कर्मचारियों के साथ जैसा व्यवहार किया है, उसके आधार पर परमेश्वर उन्हें उत्तरदायी ठहराएगा। अन्ततः अपने कामों के लिए वे परमेश्वर को उत्तर देंगे (कुलुस्सियों 4:1)।

फिलेमोन को पत्र

1यीशु मसीह के लिए बंदी बने पौलुस तथा हमारे भाई
तीमुथियुस की ओर से:

हमारे प्रिय मित्र और सहकर्मी फिलेमोन, 2हमारी
बहन अफफिया, हमारे साथी सैनिक अरखिप्पुस तथा
तुम्हारे घर पर एकत्रित होने वाली कलीसिया को:

3हमारे परम पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की
ओर से तुम्हें अनुग्रह और शांति प्राप्त हो।

फिलेमोन का प्रेम और विश्वास

4अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हारा उल्लेख करते हुए मैं सदा
अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ। 5क्योंकि मैं संत
जनों के प्रति तुम्हारे प्रेम और यीशु मसीह में तुम्हारे
विश्वास के विषय में सुनता रहता हूँ। 6मेरी प्रार्थना है
कि तुम्हारे विश्वास से उत्पन्न उदार सहभागिता लोगों
का मार्ग दर्शन करे। जिससे उन्हें उन सभी उत्तम वस्तुओं
का ज्ञान हो जाये जो मसीह के उद्देश्य को आगे बढ़ाने
में हमारे बीच घटित हो रही हैं। 7हे भाई, तेरे प्रयत्नों से
संत जनों के हृदय हरे-भरे हो गये हैं, इसलिए तेरे प्रेम से
मुझे बहुत आनन्द मिला है।

उनेसिमुस को भाई स्वीकारो

8इसलिए कि मसीह में मुझे तुम्हारे कर्त्तव्यों के लिए
आदेश देने का अधिकार है 9किन्तु प्रेम के आधार पर
मैं तुमसे निवेदन करना ही ठीक समझता हूँ। मैं पौलुस
जो अब बूढ़ा हो चला है और मसीह यीशु के लिए
अब बंदी भी बना हुआ है, 10उस उनेसिमुस के बारे में
निवेदन कर रहा हूँ जो तब मेरा धर्मपुत्र बना था, जब
मैं बन्दीगृह में था। 11एक समय था जब वह तेरे किसी
काम का नहीं था, किन्तु अब न केवल तेरे लिए बल्कि
मेरे लिए भी वह बहुत काम का है।

12मैं उसे फिर तेरे पास भेज रहा हूँ (बल्कि मुझे तो
कहना चाहिए अपने हृदय को ही तेरे पास भेज रहा
हूँ।) 13मैं उसे यहाँ अपने पास ही रखना चाहता था,
ताकि सुसमाचार के लिए मुझ बंदी की वह तेरी ओर से
सेवा कर सके। 14किन्तु तेरी अनुमति के बिना मैं कुछ
भी करना नहीं चाहता ताकि तेरा कोई उत्तम कर्म किसी
विवशता से नहीं बल्कि स्वयं अपनी इच्छा से ही हो।

15हो सकता है कि उसे थोड़े समय के लिए तुझसे दूर
करने का कारण यही हो कि तू उसे फिर सदा के लिए
पा ले। 16दास के रूप में नहीं, बल्कि दास से अधिक
एक प्रिय बन्धु के रूप में। मैं उससे बहुत प्रेम करता
हूँ किन्तु तू उसे और अधिक प्रेम करेगा। केवल एक
मनुष्य के रूप में ही नहीं बल्कि प्रभु में स्थित एक बन्धु
के रूप में भी।

17सो यदि तू मुझे अपने साझीदार के रूप में समझता
है तो उसे भी मेरी तरह ही समझ। 18और यदि उसने
तेरा कुछ बुरा किया है या उसे तेरा कुछ देना है तो उसे
मेरे खाते में डाल दे। 19मैं पौलुस स्वयं अपने हस्ताक्षरों
से यह लिख रहा हूँ। उसकी भरपाई तुझे मैं करूँगा।
(मुझे यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि तू तो अपने
जीवन तक के लिए मेरा ऋणी है।) 20हाँ भाई, मुझे
तुझसे यीशु मसीह में यह लाभ प्राप्त हो कि मेरे हृदय
को चैन मिले। 21तुझ पर विश्वास रखते हुए यह पत्र मैं
तुझे लिख रहा हूँ। मैं जानता हूँ कि तुझसे मैं जितना कह
रहा हूँ, तू उससे कहीं अधिक करेगा।

22मेरे लिए निवास का प्रबन्ध करते रहना क्योंकि मेरा
विश्वास है कि तुम्हारी प्रार्थनाओं के परिणामस्वरूप मुझे
सुरक्षित रूप से तुम्हें सौंप दिया जायेगा।

पत्र का समापन

23यीशु मसीह में स्थित मेरे साथी बंदी इपफ्रास का तुम्हें
नमस्कार। 24मेरे साथी कार्यकर्ता, मरकुस, अरिस्तर्खुस,
देमास और लूका का तुम्हें नमस्कार पहुँचे।

25तुम सब पर प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह बना रहे।